ॐ

## कविवर श्री टेकचन्दजी कृत

# श्री दशलक्षण मण्डलविधान

(जोगीरासा)

नेमीनाथो, दे तो साथो[1], भव भव और न चाहूं ।
भक्ति तिहारी, निशिदिन मन वच, काय लाय करि लाऊँ ।।
धर्म कह्यो तुम, वानी दश विध, सो मोहि होउ सहाई ।
करुणासागर, समरस गर्भित, शीश नमों थुति गाई ।।१।।

(गीता छन्द)

धर्म के दश कहे लक्षण, तिन थकी जिय सुख लहै ।
भवरोग को यह महा औषधि, मरण जामन दुख दहै ।।
यह विरत नीका मीत जीका[2], करौ आदरतैं सही ।
मैं जजौं दशविध धर्मके अंग, तासु फल ह्वै शिवमही ।।२।।

(पद्धड़ि छन्द)

यह धर्म भवोदधि नाव जान, या सेयें भव दुख होइ हान ।
यह धर्म कल्पतरु सुक्खपूर, मैं पूजौं भव दुख करन दूर ।।३।।

(गीता छन्द)

यह विरत मन कपि गले माहीं, सांकली सम जानिये ।
गज अक्ष जीतन सिंह जैसो, मोहतम रवि मानिये ।।

---

१. तुम्हारा साथ । २. जीव का मित्र ।

**सुरथान माहीं विरत नाहीं, मनुज हू शुभ कुल लहै ।**
**तातैं सु अवसर है भलो, अब करौ पूजा धुनि कहै ।।४।।**

(वेसरी छन्द)

**जाने दशलक्षण व्रत कीना, ते सतपुरुषनिमें परवीना ।**
**भवसागर फिरनौ मिटि जावै, जो नर दशलक्षण वृष भावै ।।५।।**

(भुजंगप्रयात छन्द)

**यही धर्म सारं करै पाप क्षारं, यही धर्म सारं करै सुख अपारं ।**
**यही धर्म धीरा हरै लोक पीरा, यही धर्म मीरा करै लोक तीरा ।।६।।**

(त्रिभंगी छन्द)

**यह धर्म हमारा, सब जग प्यारा, जगत उधारा हितदानी ।**
**यह दशविध गाया, जन मन भाया, उच्च बताया जिनवानी ।।**
**यह शिव करतारा, अघतैं न्यारा, भवि उद्धारा मुनि धारा ।**
**ताको मैं ध्याऊँ, शीश नवाऊँ, अर्ध चढाऊँ सुखकारा ।।७।।**

(चौपाई छन्द)

**या व्रतकी महिमा कहा वीर, दशविध धर्म हरै भवपीर ।**
**इसी धर्म विन जग भरमाय, जजहु धरम अति दुरलभ पाय ।।८।।**

(दोहा)

**दश प्रकारको धर्म यह, दशविध सुतरु जान ।**
**वांछित पद सेवक लहैं, अधिक कहा सुखदान ।।९।।**

सोरठा--**धर्म हमारा नाथ, धर्म जगतका सेहरा ।**
**भव भवमें हो साथ, और न वांछा मनविषैं ।।१०।।**

मण्डलमध्ये परिपुष्पांजलि क्षिपेत् ।

# समुच्चय पूजा

(त्रिभंगी छन्द)

**यह धर्म क्षमावा मान गुमावा, सरल सुभावा सतिवानी ।
शुचि भाव करावा संजम लावा, तप करवावा अधिकानी ।।
शुचि त्याग बतावै नगन पुजावै, शील बड़ावै शिवदाई ।
यह धर्म हमारा थाप करारा, पूजन धारा सिरनाई ।।१।।**

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: । अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

(मणुयणाणंदकी चाल)

**क्षीरसागर तना नीर शुभ लाइये ।
कनक झारी विषैं धार गुण गाइये ।।
मरण उतपति नहीं होय ता फल सही ।
जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।१।।**

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

**नीर संग अगुरु चन्दन सु घिस लायजी ।
सुभग पातर विषै धारि थुति गायजी ।।
जगत तप तासु फल तुरत नाशै सही ।
जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।२।।**

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्य: संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

**लेइ अक्षत भले मुक्तिफल से कहे ।**
**ऊजले अखण्ड सुभग स्वर्ण पातर लहे ।।**
**अखयपद पावनै आप मनमें सही ।**
**जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।३।।**

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

**फूल कञ्चनवरन कलपतरुके भले ।**
**गंध जुत रंग शुभ लेइ निज कर चले ।।**
**माल तिन गूंथि कामबाण नाशक सही ।**
**जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।४।।**

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्यः कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

**सुगम नैवेद्य मोदक घने लाइये ।**
**विविध स्वादमय सु धरि भक्ति उर भाइये ।।**
**भूख-दुखहर्ण स्वर्ण-पात्र धरिके सही ।**
**जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।५।।**

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**दीप मणि रतनमय और घृतमय सही ।**
**धारि कनक थालमें सु आरति जु करि लही ।।**
**धर्मज्योति मोह अंधकार नाशिका सही ।**
**जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।६।।**

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

**धूप दश अंग मय लायकर सारजी ।**
**अगनि संग खेवहूँ सुभक्ति उर धारजी ।**
**कर्म छयकार भव वास नाशन सही ।**
**जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।७।।**

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

**लौंग खारिक सुनारिकेल सुक्खकारजी ।**
**और बादाम पुंगी फलादि सार जी ।।**
**लेई निज हाथ में सुभक्ति धरिके सही ।**
**जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।८।।**

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्य: मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

**नीर गंध अक्षत सु फूल चरु सोई जी ।**
**दीप अरु धूप फल अरघ संजोइ जी ।।**
**पुरट थाली विषैं भक्ति करिके सही ।**
**जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।९।।**

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्य:ऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

**धर्म भवकूप तैं काढ़ने को रसी ।**
**भव उदधि पार करतार नवका इसी ।।**

**धर्म सुख दैन जिमि तात माता सही ।**
**जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।१०।।**

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्य: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

## अथ जयमाला

(दोहा)

**दश वृष रतन मिलायके, माल करै भवि जोय ।**
**धरै आपने उर विषैं, ता सम अवर न कोय ।।१।।**

(वेसरी छन्द)

**दशलक्षण वृष शिवमग दीवा, धर्म थकी सुख पावै जीवा ।**
**मुकति दीप पहुँचावन जावा, ये दश धर्म जजौं जुत भावा ।।२।।**

**दशविधि धरम धरै जो कोई, करम नाशि फिरि दुख नहिं होई ।**
**धरम जु साधन और न कोई, यों दश धर्म जजौं मद खोई ।।३।।**

**धरम जीव का पालनहारा, धर्म मान का खण्डन वारा ।**
**धर्म थकी जावै कुटिलाई, इमि दश धर्म जजौं चितलाई ।।४।।**

**सांच वचन सम धरम न जानौ, धर्म भाव निर्मल पहिचानौ ।**
**धर्म जीव रख इन्द्रिय जीतं, इमि दश धर्म जजौं करि प्रीतं ।।५।।**

**तप ही सर्व धर्मका मूला, त्याग धरमतैं क्षय अघ थूला ।**
**धर्म नगन सम और न कोई, इनि दश धर्म जजौं मद कोई ।।६।।**

**नारी त्याग धरम शिवदाई, ये दश धरम जगतमैं भाई ।**
**जो दशलक्षण मनमें आनै, सो भव तप हरि शिवपद ठानै ।।७।।**

**दशलक्षण व्रत इण विधि कीजै, उत्कृष्टै दश वास करीजै ।**
**नातर बेले पारन भाई, तथा इकंतर वास कराई ।।८।।**

**शक्तिहीन ह्वै तो सुन मीता, दश एकंत करौ धरि प्रीता ।**
**व्रत दश वरस करै मन लाई, करु उद्यापन मन वच काई ।।९।।**

**नहिं उद्यापन शक्ति तुम्हारी, तौ दूनौ व्रत करु सुखकारी ।**
**पीछे यथाशक्ति खरचावै, पूजन धर्म उद्योत करावै ।।१०।।**

(दोहा)

**इत्यादिक विधि सहित जो, धर्म करै दश सार ।**
**पावै सुख मन भावनो, अनुक्रम ले भव पार ।।११।।**

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्य: पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

।। इति समुच्चय पूजा ।।

卐

# उत्तम क्षमा धर्म पूजा

(अडिल्ल)

**जीव तिरस थावर जेते जगमें सही ।**
**देव नरक नर पशू चारि गति की मही ।।**
**तिन सब ऊपर दयाभाव उरमाहिं जी ।**
**सो है उत्तम क्षमा, थापि जजुं याहिं जी ।।१।।**

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांग ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांग ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: ।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांग ! अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

## अथाष्टकम्

( पद्धड़ी छन्द )

**जल गंग नदी को विमल सोइ, धरि रतन पयाले शुद्ध होइ ।**
**यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।१।।**

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।

**बावन चन्दन घसि नीर लाय, धरि कनक रकेबी जिन चढ़ाय ।**
**यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।२।।**

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं ।

**अक्षत मुक्ताफल सम जु लाय, अति उज्वल नखशिख शुद्ध भाय ।**
**यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।३।।**

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।

**शुभ फूल कलपतरुके अनूप, करि माला सुभग सुगंध रूप ।**
**यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।४।।**

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।

**नाना रस पूरित चरु सम्हार, शुभ मोदक आदि अनेक धार ।**
**यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।५।।**

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।

**मणिदीपकसार बनाय लाय, धरि कनक थाल भरि भक्ति भाय ।**
**यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।६।।**

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं ।

**ले धूप अगरुजा गंधकार, दुर्भाव हुताशन मांहि जार ।**
**यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।७।।**

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं ।

**फल नारिकेल बादाम सोइ, पुंगीफल खारक भक्ति जोइ ।**
**यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।८।।**

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।

**जल चन्दन अक्षत फूल लाय, चरु दीप धूप फल अरघ भाय ।**
**यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।९।।**

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय अनर्ध्यपदप्राप्तये अर्घं ।

## अथ प्रत्येकाघ्र्याणि

( अडिल्ल )

**पाप प्रकृति कर जीव अशुभ बंधन कर्यो ।**
**थावर नामा कर्म उदय दुखको भर्यो ।।**
**पृथ्वी माहिं सु जाय सहै बहु अघ भला ।**
**तिन का रक्षण-भाव छमा उत्तम भला ।।१।।**

ॐ ह्रीं श्री पृथिवीकायिकपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

**जे जलकायिक जीव ज्ञान विन दुख लहैं ।**
**इक इन्द्रियके द्वार अतुल विपदा सहैं ।।**
**तिनको दुखमय जानि मुनी करुणा करैं ।।**
**तसु प्रसादतैं झटिति मोक्ष-वनिता वरें ।।२।।**

ॐ ह्रीं श्री जलकायिकपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं निर्व० ।

**अगनिकाय धर जीव एक इन्द्रिय सही ।**
**नाना दुख तन सहैं जलैं सब जग मही ।।**
**इन पर करुणाभाव धरैं जे भवि सही ।**
**सो ही उत्तम क्षमा मोक्षदाता कही ।।३।।**

ॐ ह्रीं श्री अग्निकायिकपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

**पवन कायके जीव महा संकट सहैं ।**
**हाथ पांव मुख वचन थकी बाधा लहैं ।।**
**इन पर करुणाभाव जती धारैं सही ।**
**सो ही उत्तम क्षमा कही शिव की मही ।।४।।**

ॐ ह्रीं श्री वायुकायिकपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

**हरित कायमें प्राणी अति वेदन लहै ।**
**छेदन भेदन कष्ट महा अघ फल सहै ।।**
**इन पर समताभाव सुखी इनको चहै ।**
**सो ही उत्तमक्षमा धारि मुनि शिव लहै ।।५।।**

ॐ ह्रीं श्री वनस्पतिकायिकपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

**थावरके पन भेद पाप फलतैं बने ।**
**सूक्षम बादर भेद दोय यों जिन भने ।।**
**इनको दुखमय जानि दया मन लाय हैं ।**
**सो ही उत्तम छमा जजौं शिरनाय हैं ।।६।।**

ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्मस्थूलपंचस्थावरपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

**लट अरु जोंक गिंडोला इल्ली जानिये ।**
**कौड़ी शंख दुइन्द्रिय अति दुख थानिये ।।**

**इन पर करुणाभाव जती धारैं सही ।**
**सो ही उत्तम छमा जजौं शिव की मही ।।७।।**

ॐ ह्रीं श्री द्वीन्द्रियजीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

**चींटी कुंथा खटमल वीछू दुख मही ।**
**तेइन्द्रिय परजाय पई घुण आदि ही ।।**
**इनको दुखमय जानि मुनी करुणा धरैं ।**
**सो ही उत्तम छमा जजौं सब अघ जरैं ।।८।।**

ॐ ह्रीं श्री त्रींन्द्रियजीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

**माखी मच्छड़ टीड़ी भंवरादिक सही ।**
**बर्र ततइया मकड़ी चतुरान्द्रिय कही ।।**
**इनको दुखिया देखि मुनी करुणा धरैं ।**
**सो ही उत्तम छमा जजौं वसुविधि जरैं ।।९।।**

ॐ ह्रीं श्री चतुरिन्द्रियजीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

**इन्द्रिय पांचों होय नहीं मन जो लहैं ।**
**ते जिय जानि असैनी अघफल अति दहैं ।।**
**इनको दुख भरिपूर जानि करुणा धरै ।**
**सो ही उत्तम छमा जजौं शिवथल धरै ।।१०।।**

ॐ ह्रीं असंज्ञीपंचेन्द्रियजीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

**नरक जीव अति दुखी पापफलतैं सही ।**
**छेदन भेदन पीर सहैं जाति ना कही ।।**
**इन पर करुणाभाव जती अति लाय हैं ।**
**सो ही उत्तम छमा जजौं सुखदाय हैं ।।११।।**

ॐ ह्रीं नारकीजीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

( गीता छन्द )

**मनुष क्रोध रु मान माया, लोभवश दुखिया घने ।**
**बहु चाह पीड़त रागद्वेषी, अघ घनो उपजे तिने ।।**
**तिन देख यतिवरद या लावैं, महा दीनदयाल जी ।**
**सो धर्म उत्तम छमा निर्मल जजौं, भाग्य विशाल जी ।।१२।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यजीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

**परकार चारों देव गतिमें, जीव सुख राचै सही ।**
**लछि देखि परकी झुरै नित ही, मानते पीड़ा कही ।।**
**तिन देखि मुनि उर दया भावै, महा कोमल भावजी ।**
**सो धर्म उत्तम क्षमा पूजों, अर्घतैं कर चावजी ।।१३।।**

ॐ ह्रीं चतुर्विधदेवजीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

( चौपाई )

**थावर तिरस जीव सब जोई, चहुंगति करमनि के वशि होई ।**
**तिनको देखि दया उर लाई, सो उत्तम खम धर्म जजाई ।।१४।।**

ॐ ह्रीं त्रसस्थावरसमस्तजीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

## जयमाला

( दोहा )

**धर्म क्षमा उत्तम बड़ो, सब जीवन सुखदाय ।**
**जजैं जीव सो पुनि लहै, करै जु शिवपुर जाय ।।१।।**

( वेसरी छन्द )

**सब जीवनमें राग न दोषा, सो है क्षमा धरम निरदोषा ।**
**दुर्जन कृत उपसर्ग लहावै, ताहू पै समभाव रहावै ।।२।।**

**मुनिको वचन कहै दुखकारी, मरम छेद छेदै अघ धारी ।**
**मान खण्ड किरिया करवावै, तब मुनि क्षमा धर्म मन लावै ।।३।।**

**जो कोई दुष्ट मुनिनको मारै, तीक्ष्ण शस्त्र तैं करि परिहारै ।**
**बांधैं तनको खेद न पावै, तिन पर क्षमा धर्म मन लावै ।।४।।**

**अति दुखिया जियको ऋषि जानै, तब मुनि अनुकम्पा मन आनै ।**
**आपा परको हित उपजावै, तब मुनि क्षमा धरम मन लावै ।।५।।**

**उत्तम क्षमा धरम सुखदाई, क्षमा धरम सब जियका भाई ।**
**जब मुनि हू पै कष्ट जु आवै, तब मुनि क्षमा धर्म मन लावै ।।६।।**

**क्षमा धरमसी ढाल न होई, क्रोध समान प्रहार न कोई ।**
**क्षमा समान न बल अति पावै, तातें जती क्षमा वृष भावै ।।७।।**

**क्षमा धरम शिव राह बताई, क्षमा तात माता अरु भाई ।**
**जातै सिद्ध सुखनको पावै, ऐसी क्षमा मुनी मन लावै ।।८।।**

( सोरठा )

**क्षमा आभूषण सार, उरमें जो पहिरे सही ।**
**ते भवसागर पार, जजौं धर्म उत्तम क्षमा ।।९।।**

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय पूर्णार्घं ।

।। इति उत्तमक्षमा धर्म पूजा ।।

# दशलक्षण धर्म पूजन

**(पं. द्यानतरायजी कृत)**

*(अनुष्टुप) स्थापना (संस्कृत)*

उत्तमक्षान्तिकाद्यन्त-ब्रह्मचर्य-सुलक्षणम्।
स्थापय दशधा धर्ममुत्तमं जिनभाषितम्।।

*(अडिल्ल) स्थापना (हिन्दी)*

उत्तम क्षमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं।
आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार हैं,
चहुँगति-दुखतैं काढ़ि मुकति करतार हैं।।

***ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।***
***ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।***
***ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।***

*(सोरठा)*

हेमाचल की धार, मुनि-चित सम शीतल सुरभि।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

***ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येति दशलक्षणधर्माय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।***

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

***ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।***

अमल अखण्डित सार, तन्दुल चन्द्र समान शुभ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

***ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा।***

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरध-लोकलों।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

***ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि. स्वाहा।***

नेवज विविध निहार, उत्तम षट्-रस-संजुगत।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

***ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।***

बाति कपूर सुधार, दीपक-ज्योति सुहावनी।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

*ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।*

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

*ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।*

फल की जाति अपार, घ्रान-नयन-मन-मोहने।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

*ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।*

आठों दरब सँवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसौं।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

*ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।*

## अंग-अर्घ्य

*(सोरठा)*

पीड़ैं दुष्ट अनेक, बाँध मार बहुविधि करैं।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै पीतमा।।
उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह-भव जस, पर भव सुखदाई।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुन को औगुन कहै अयानो।।
कहि है अयानो वस्तु छीनै, बाँध मार बहुविधि करै।
घर तैं निकारै तन विदारै, वैर जो न तहाँ धरै।।
ते करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा।
अति क्रोध-अगनि बुझाय प्रानी, साम्य-जल ले सीयरा।।

*ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

मान महाविषरूप, करहि नीच-गति जगत में।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा।।
उत्तम मार्दव गुन मन-माना, मान करन को कौन ठिकाना।
बस्यो निगोद माहिं तैं आया, दमरी रूँकन भाग बिकाया।।

रूँकन बिकाया भाग वशतैं, देव इक-इन्द्री भया।
उत्तम मुआ चाण्डाल हूवा, भूप कीड़ों में गया।।
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जल-बुदबुदा।
करि विनय बहु-गुन बड़े जन की, ज्ञान का पावै उदा।।

*ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

कपट न कीजै कोय, चोरन के पुर ना बसै।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु-सम्पदा।।
उत्तम आर्जव रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी।
मन में होय सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सौं करिये।।
करिये सरल तिहुँ जोग अपने देख निरमल आरसी।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट-प्रीति अँगार-सी।।
नहिं लहै लछमी अधिक छल करि, करम-बन्ध विशेषता।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता।।

*ॐ ह्रीं श्री उत्तम-आर्जवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

धरि हिरदै सन्तोष, करहु तपस्या देह सों।
शौच सदा निर्दोष, धरम बड़ो संसार में।।
उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना।
आशा-पास महा दुखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्रानी।।
प्रानी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञान ध्यान प्रभावतैं।
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि-दोष सुभावतैं।।
ऊपर अमल मल भर्‍यो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहै।
बहु देह मैली सुगुन-थैली, शौच-गुन साधू लहै।।

*ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

कठिन वचन मति बोल, पर-निन्दा अरु झूठ तज।
साँच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी।।
उत्तम सत्य-बरत पालीजै, पर-विश्वासघात नहिं कीजै।
साँचे-झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो।।
पेखो तिहायत पुरुष साँचे को दरब सब दीजिये।
मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा, साँच गुण लख लीजिये।।

ऊँचे सिंहासन बैठि वसु नृप, धरम का भूपति भया।
वच झूठ सेती नरक पहुँचा, सुरग में नारद गया।।

*ॐ ह्रीं श्री उत्तमसत्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्रिय मन वश करो।
संजम-रतन सँभाल, विषय-चोर बहु फिरत हैं।।
उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव-भव के भाजैं अघ तेरे।
सुरग-नरक-पशुगति में नाहीं, आलस-हरन करन सुख ठाँ हीं।।
ठाहीं पृथीवी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरो।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो।।
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जग-कीच में।
इक घरी मत विसरो करो नित, आयु जम-मुख बीच में।।

*ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

तप चाहैं सुरराय, करम-शिखर को वज्र है।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज सकतिसम।।
उत्तम तप सब माहिं बखाना, करम-शैल को वज्र-समाना।
बस्यो अनादि निगोद मँझारा, भू विकलत्रय पशु तन धारा।।
धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता।
श्रीजैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषय-पयोगता।।
अति महा दुरलभ त्याग विषय-कषाय जो तप आदरैं।
नर-भव अनूपम कनक घर पर, मणिमयी कलसा धरैं।।

*ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

दान चार परकार, चार संघ को दीजिए।
धन बिजुली उनहार, नर-भव लाहो लीजिए।।
उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय आहारा।
निहचै राग-द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान सँभारै।।
दोनों सँभारै कूप-जल सम, दरब घर में परिनया।
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाय खोया बह गया।।

धनि साध शास्त्र अभय दिवैया, त्याग राग विरोध को।
बिन दान श्रावक साधु दोनों, लहैं नाहीं बोध को।।

*ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

परिग्रह चौबिस भेद, त्याग करैं मुनिराजजी।
तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइए।।
उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह-चिन्ता दुख ही मानो।
फाँस तनक-सी तन में सालै, चाह लँगोटी की दुख भालै।।
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि-मुद्रा धरैं।
धनि नगन पर तन-नगन ठाड़े, सुर-असुर पायनि परैं।।
घर माहिं तिसना जो घटावे, रुचि नहीं संसार सौं।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर-उपगार सौं।।

*ॐ ह्रीं श्री उत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

शील-बाढ़ नौ राख, ब्रह्म-भाव अन्तर लखो।
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर-भव सदा।।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ।
सहैं बान-वरषा बहु सूरे, टिकै न नैन-बान लखि कूरे।।
कूरे तिया के अशुचि तन में, काम-रोगी रति करैं।
बहु मृतक सड़हिं मसान माहीं, काग ज्यों चोंचैं भरैं।।
संसार में विष-बेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा।
'द्यानत' धरम दश पैड़ि चढ़ि कै, शिव-महल में पग धरा।

*ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## समुच्चय जयमाला

*(दोहा)*

दश लच्छन वन्दौं सदा, मनवांछित फलदाय।
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय।।

*(चौपाई)*

उत्तम छिमा जहाँ मन होई, अन्तर–बाहिर शत्रु न कोई।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासे, नाना भेद ज्ञान सब भासे।।
उत्तम आर्जव कपट मिटावे, दुरगति त्यागि सुगति उपजावे।
उत्तम शौच लोभ–परिहारी, सन्तोषी गुण–रतन भण्डारी।।
उत्तम सत्य–वचन मुख बोले, सो प्रानी संसार न डोले।
उत्तम संजम पाले ज्ञाता, नर–भव सफल करै, ले साता।।
उत्तम तप निरवांछित पाले, सो नर करम–शत्रु को टाले।
उत्तम त्याग करे जो कोई, भोगभूमि–सुर–शिवसुख होई।।
उत्तम आकिंचन व्रत धारे, परम समाधि दशा विसतारे।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावे, नर–सुर सहित मुकति–फल पावे।।

***ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येति दशलक्षणधर्माय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।***

*(दोहा)*

करै करम की निरजरा, भव पींजरा विनाशि।
अजर अमर पद को लहैं, 'द्यानत' सुख की राशि।।

***(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् )***

देखो जी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है।
कर ऊपर कर सुभग विराजै, आसन थिर ठहराया है।।टेक.।।
जगत विभूति भूति सम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है।
सुरभित श्वासा आशा वासा, नासा दृष्टि सुहाया है।।१।।
कंचन वरन चले मन रंच न सुर–गिरि ज्यों थिर थाया है।
जास पास अहि मोर मृगी हरि, जाति विरोध नशाया है।।२।।
शुध–उपयोग हुताशन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है।
श्यामलि अलकावलि सिर सोहे, मानो धुआँ उड़ाया है।।३।।
जीवन–मरन अलाभ–लाभ जिन सबको नाश बताया है।
सुर नर नाग नमहिं पद जाके ''दौल'' तास जस गाया है।।४।।